लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to truth in public interest

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय,
मणिपुर व्द्वारा प्रकाशित

संगाई

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

हिंदी की ये बात सुनी जब ,
ग्लानि से भर उठा मैं तब,
सोचा मां की पीर बांट दूं,
जन - जन तक हिंदी पहुंचा दूं ।।

संगाई (गृह पत्रिका)

पांचवा अंक

सितंबर 2021

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री जॉन के. सेलाटे,

प्रधान महालेखाकार (ले.प)

उप संरक्षक

श्री रोबर्ट मोइरांगथेम,

वरि. उप महालेखाकार(ले.प)

संपादक मंडलः

श्री टी. जोसेफ ल्हंडीम, हिंदी अधिकारी

श्रीमती ए. रीता देवी, हिंदी अधिकारी

श्री राहुल चौधरी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अनुक्रमणिका

पृष्ठ परिचय	पृष्ठ संख्या
• प्रधान महालेखाकार का संदेश	1
• वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश	2
• संपादक की कलम से	3
• संपादक की कलम से	4
• कविता- औरतेः ए. रीता देवी(संपादक की कलम से)	5
• मणिपुर कार्यालय की गतिविधियाँ	6-7
• हिंदी पत्राचार हेतु उपयोगी वाक्य	8
• राजभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार	9
• कविता- चाय_पियेंगे? : संतोष कुमार	10-11
• कविता- बंजारा हुआः सर्वेश कुमार	12
• लघु कथा- संजीव कुमार	13-14
• कविता- क्या भूल गए तुमः गुलशन कुमार	15
• कविता- मजदूर : अब्दुल सलाम	16-17
• कविता-खुशियों का बाजारः अभिमन्यु कुमार	18-19
• लेख- मणिपूर भारत में खेलों का पावरहाउस संजेनबामनिंथौजाउ	20-22
• लेखा-अफगानिस्तान-भौगोलिक स्थिति के कारण एक युध्दभूमिःयोगेश कुमार	23-24
• लेख-रामचरितमानस की प्रासंगिकताः अभिनव चंद्रा	25-26

संदेश

मुझे अति प्रसन्नता हुई कि हमारे कार्यालय की हिंदी वार्षिक पत्रिका "संगाई" के पाँचवे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रयास सराहनीय है क्योंकि पिछले दो वर्षों के दौरान कार्यालय का सामान्य कामकाज कोविड-19 महामारी से गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है।

इस कार्यालय में सभी स्तर पर प्रशिक्षण और कार्यशाला आयोजित कर राजभाषा नीति को लागू करने के लिए सभी वर्गों द्वारा अथक प्रयास किया जा रहा है। अधिकारिक संचार और हिंदी से संबंधित उल्लेखनीय सुधार हुआ है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि होगी। यह पत्रिका कर्मचारियों द्वारा हिंदीके विकास के प्रति उनकी जागरूकता,कौशल और अर्जित ज्ञान का प्रतिबिंब है तथा हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा किए गए समर्पण व कड़ी मेहनत का परिणाम है ।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (ले.प.)

संदेश

अति प्रसन्नता की बात है कि संगाई का पांचवा अंक प्रकाशित हो रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्र की पहचान है। हमें संविधान द्वारा राजभाषा हिंदी के विकास और प्रयोग प्रसार का दायित्व सौंपा गया है। इसी कड़ी में आगे बढ़ते हुए संगाई पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें राजभाषा संबंधी गतिविधियों के साथ कर्मचारी की रचनाओं,कविताओं एवं कार्यक्रमों के छायाचित्रों का संकलन किया गया है |

साथियों आज कोविड-19 वैश्विक महामारी का समय काफी कठिन है सभी लोग इस महामारी के प्रभाव से ग्रस्त है,लेकिन हमें आशा है कि आने वाले दिनों में हम प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे ।हम सब इस समस्या से निकलकर कार्यालय को नई बुलन्दियों पर लेकर जाएंगे।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन कार्य हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

रोबर्ट

वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादक

टी.जोसेफ ल्हंडीम, हिंदी अधिकारी

हिंदी दिवस 2021, के इस अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई देते हुए तथा इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संगाई" के पांचवे संस्करण के प्रकाशन का शुभ समाचार साझा करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। लॉकडाउन और अन्य बाधाओं के बावजूद हमारे प्रधान महालेखाकार की देखरेख में इस कार्यालय में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने की भावना पहले से कहीं अधिक सशक्त देखी गई है।

हालांकि इस पत्रिका की प्रिंटेड कॉपी का प्रकाशन संभव नहीं है लेकिन कई सहयोगियों द्वारा दिए गए लेखों ने बड़े उत्साह के साथ ई-पत्रिका को प्रकाशित करना संभव बना दिया है। पिछले दो वर्षों में इस कार्यालय के हिंदी अधिकारी के रूप में, मुझे अपने कर्मचारियों और अधिकारियों की भागीदारी में लगातार वृध्दि देखने के अलावा, हिंदी पखवाड़ा और अन्य हिंदी प्रचार गतिविधियों से बहुत लाभ हुआ है।

मुझे आशा है कि यह ई-पत्रिका नए भारत के जोश,सौहार्द और आशावाद को प्रतिबिंबित करेगी, जहाँ सभी क्षेत्रों,धर्मों और जातियों के लोग एक साथ आते हैं और एक उज्जवल भविष्य के लिए इस राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

जय हिंद.....

संपादकीय.

राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक

प्रिय पाठकों,

मुझे सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मणिपूर कार्यालय की ई-पत्रिका "संगाई" के पांचवे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ । राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन के साथ हमारे कार्यलय के कर्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करना, इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य ध्येय है। इस अंक में कोविड महामारी के दौर में ऑनलाइन की भूमिका,हमारे स्टाफ सदस्यों की कलाकृतियाँ, राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किये गये कार्य तथा कार्यालय की गतिविधियों की झलक प्रस्तुत की गई है ।

मैं इस अवसर पर पत्रिका को साकार बनाने के लिए संरक्षक प्रधान महालेखाकार महोदय तथा सहसंरक्षक वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय तथा रचनाओं द्वारा अपने योगदान देने वाले सभी स्टाफ सदस्यों का तहे दिल से आभार प्रकट करता हूँ।

"संगाई" की अविरल धारा के मार्ग को प्रशस्त करने में आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहेगा।

औरतें

ए. रीता देवी, हिंदी अधिकारी

अनपढ़ पढ़ी-लिखी समझदार,नासमझ
औरतें देखी हैं मैने बचपन से
रहती सहमी सी हर फिक्र में
औलाद,शौहर,दुप्पट्टा बमुश्किल संभालती
इसी को नियति सी मानती
जैसे कोई बैठा हो हंटर लिए
मार देगा जो कुछ सपने जिये

फिर औरतें देखी हैं
खुद पर विश्वास हो जिन्हें
मीलों दूर छोड़ा डर को कहीं
दबंग मर्दो सरीखी या अधिक
उत्साही और निर्भीक
ऊर्जा से लबरेज
लिए नैसर्गिक तेज

रफ़ाक़त को राह दिखाती
एक बेहतर जहाँ की उम्मीद जगाती .....

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार का वक्तव्य

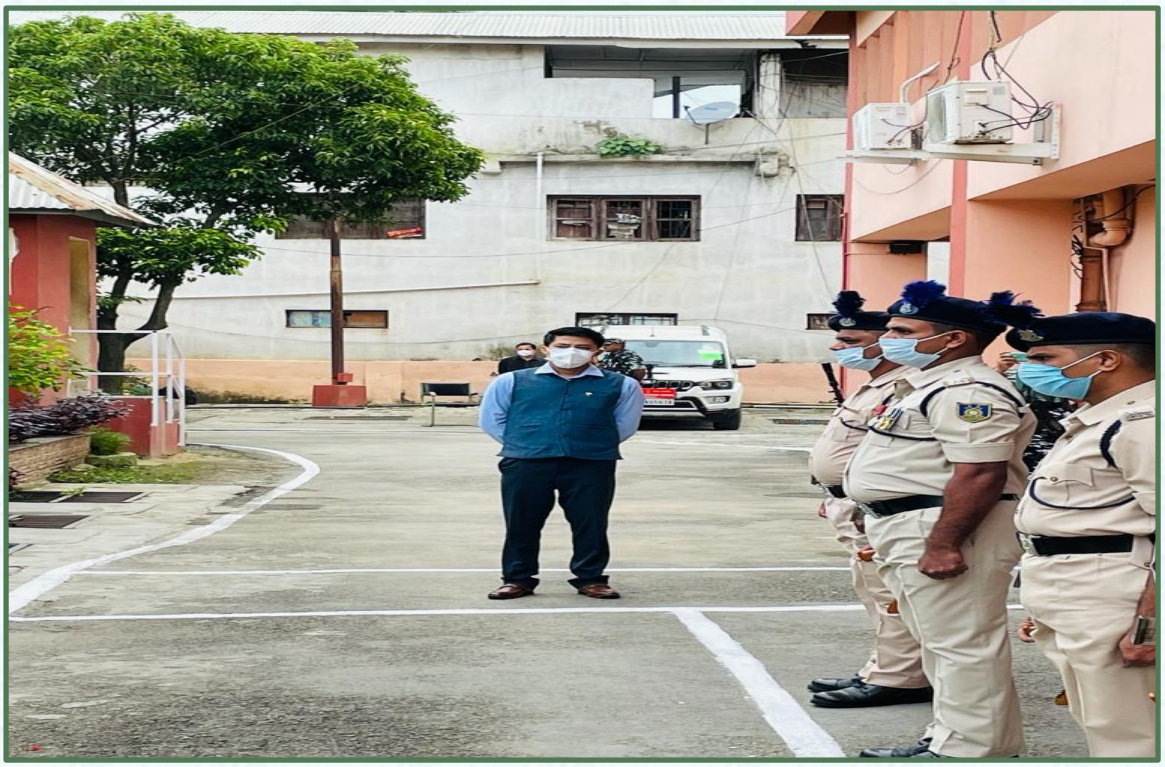

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वरिष्ठ उप महालेखाकार संबोधित करते हुए सी.आर.पी.एफ के जवानों को

पिछले वर्ष हिंदी दिवस की झलकियां

पिछले वर्ष हिंदी दिवस पर माननीय गृह मंत्री का संदेश पढ़ते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार

हिंदी पत्राचार हेतु उपयोगी वाक्य

अँग्रेजी	हिंदी	अँग्रेजी	हिंदी
Above mentioned	उपर्युक्त	Acceptable proposal	स्वीकार्य प्रस्ताव
Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की जाए	Action has already been taken in the matter	इस मामले में कार्रवाई पहले की जा चुकी है
All concerned should note	सभी संबंधित नोट करें	A matter of extreme urgency	अत्यंत आवश्यक मामला
As per instruction	अनुदेशानुसार	As in force for the time being	जैसा कि फिलहाल लागू है
Bills for signature please	बिल हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत	Bring into operation	चालू करना/अमल में लाना
Carried forward	अग्रेनीत	Charge handed over	कार्भार सौंप दिया
Circulate and then file	संबंधित व्यक्तियों को दिखाकर फाइल करे	Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है
Compliance with orders is still awaited	आदेशों के अनुपालन की अभी भी प्रतिक्षा है	Consolidated report may be furnished	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए
Copy forwarded for information/necessary action	सूचना/आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि अग्रेषित	Clearance of outstanding cases of pension	पेंशन के बकाया मामलों का निपटान
Copy is enclosed for ready reference	तत्काल संदर्भ हेतु प्रतिलिपि संलग्न है	Details may be furnished	ब्यौरा प्रस्तुत किया जाए
Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत	Submitted for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Decision is awaited	निर्णय की प्रतिक्षा है	Duly sanctioned	विधिवत् मंजूर किया हुआ
Extension of leave	छुट्टी बढ़ाना	For approval	अनुमोदन के लिए
Further orders will follow	आगे और आदेश भेंजे जाएंगे	Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
Pending conformation	पुष्टि होने तक	Put up for verification	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें

राजभाषा हिंदी की प्रचार प्रसार हेतु क्या करें

- ❖हिंदी में लिखीत या हिंदी में हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर हिंदी में दे
- ❖अपने आवेदन पत्र में हिंदी का प्रयोग करें
- ❖यदि आप हिंदी में प्रवीण है तो अन्य सहकर्मियों को भी हिंदी का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें और उनकी मदद करें
- ❖अपनी और से बातचीत की पहल हिंदी में करें
- ❖सभी प्रकार के अग्रेषण पत्र, अनुस्मारक और नित्य प्रकृति के पत्र हिंदी में भेंजे
- ❖पत्राचार और ई-मेल में हिंदी का प्रयोग करें

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए- आप क्या न करें

- ➢अपने उन सहकर्मियों पर टीका टीप्पणी न करें जो हिंदी में काम करते हैं
- ➢विभिन्न फाइलों,पत्रों पर टिप्पणियाँ आदि अंग्रेजी में ना लिखें
- ➢हिंदी में मुद्रित पत्र प्रारूपों में प्रविष्टियाँ अंग्रेजी में ना करें
- ➢अपने आवेदन पत्र आदि अंग्रेजी में देने से बचे
- ➢हिंदी में हस्ताक्षरित पत्र का उत्तर अंग्रेजी में ना दें

चाय_पियेंगे?

संतोष कुमार,
डी.ई.ओ

जब कोई पूछता है "चाय पियेंगे"...?
तो बस नहीं पूछता वो तुमसे
दूध,चीनी और चायपत्ति
को उबालकर बनी हुई एक कप चाय के लिए।

वो पूछता है...
क्या आप बांटना चाहेंगे
कुछ चीनी सी मीठी यादें
कुछ चायपत्ति सी कड़वी
दुःख भरी बातें..?
वो पूछता है...
क्या आप चाहेंगे
बाँटना मुझसे अपने कुछ
अनुभव,मुझसे कुछ आशाएं
कुछ नयी उम्मीदें...?
उस एक प्याली चाय के
साथ वो बाँटना चाहता है...
अपनी जिंदगी के वो पल
तुमसे... जो "अनकही" है अब तक
वो दास्ताँ... जो "अनसुनी" है अब तक....
वो कहना चाहता है...
तुमसे... तमाम किस्से
जो सुना नहीं पाया अपनों
को भी...

एक प्याली चाय
के साथ को अपने उन टूटे
और खत्म हुए ख्वाबों को
एक और बार जी लेना
चाहता है
वो उस गर्म चाय
के प्याली के साथ उठते हुए धुओं के साथ
कुछ पल को अपनी
सारी फ़िक्र उड़ा देना चाहता है।
वो कर लेना चाहता है
अपने उस एक नजर वाले हुए
प्यार का इजहार,
तो कभी उस शिद्द से की
गयी मोहब्बत का इकरार..
कभी वो देश की
राजनीतिक स्थिति से
अवगत कराना चाहता है
तुम्हें....
तो कभी बताना चाहता है
धर्म और मंदिरों के
हाल चाल...
तो बस जब पुछे कोई
आगली बार तुमसे
"चाय-पियेंगे...?"
तो हाँ कहकर बाँट लेना उसके साथ
अपनी चीनी सी मीठी यादें
और चायपत्ति सी कड़वी दुख भरी बातें...।।

बंजारा हुआ

सर्वेश कुमार, आशुलिपिक

बहादूर हूँ मगर हारा हुआ,
बुरे मैं वक़्त का मारा हुआ।।

आँखों के समन्दर ने मुझे छूआ बहुत,
मैं शायद इसलिए खारा हुआ।।

खुद को भी कहाँ मालूम,
मैं किस हालात का मारा हुआ।।

धो चुके जो सारे अपने पाप तो,
मैं इन्सा नहीं, गंगा का किनारा हुआ।।

किसी को ढूँढ़ना मक़सद है मेरा,
नहीं मैं यूँ ही आवारा हुआ।।

सजा लो मुझमें भी गुरूग्रंथ,साहिब,
बड़ी मुश्किल से गुरूद्वारा हुआ।।

चमकने लग गई हैं आँखे मेरी,
मैं इंसा हूँ कि सितारा हुआ।।

मुझे बचपन से रास आये हैं रस्ते,
नतीजा ये कि मैं बंजारा हुआ।।

लघु कथा

संजीव कुमार,आशुलिपिक

एक नगर में एक मशहूर चित्रकार रहता था।

चित्रकार ने एक बहुत सुन्दर तस्वीर बनाई और उसे नगर के चौराहे मे लगा दिया

और नीचे लिख दिया कि जिस किसी को, जहाँ भी इस में कमी नजर आये वह वहाँ निशान लगा दे।

जब उसने शाम को तस्वीर देखी उसकी पूरी तस्वीर पर निशानों से ख़राब हो चुकी थी।

यह देखकर वह बहुत दुखी हुआ।

उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे वह दुःखी बैठा हुआ था।

तभी उसका मित्र वहाँ से गुजरा उसने उस के दुःखी होने का कारण पूछा तो उसे पूरी घटना बताई।

उसने कहा एक काम करों कल दूसरी तस्वीर बनाना और उसमे लिखना कि जिस किसी को इस

तस्वीर में जहाँ कहीं भी कोई कमी नजर आये उसे सही कर दे।

उसने अगले दिन यही किया।शाम को जब उसने अपनी तस्वीर देखी उसने देखा कि तस्वीर पर किसी ने कुछ नहीं किया।

वह संसार की रीति समझ गया।।।।।।।।

"कमी निकालना,निंदा करना,बुराई करना आसान है लेकिन उन कमियों को दूर करना अत्यंत कठिन होता है ।

जब दुनिया यह कहती है कि

'हार मान लो'

तो आशा धिरे से कान में कहती है .....

एक बार फिर प्रयास करों,

और यह ठीक भी है.,,,,,,,,

"जिंदगी आईसक्रीम की तरह है,टेस्ट करो तो भी पिघलता हैं.....

वेस्ट करों तो भी पिघलती है,,,,,.....

इसलिए जिंदगी को टेस्ट करना सीखों ।

गुलशन कुमार,डी.ई.ओ

क्या भूल गए तुम

कहाँ कटा सर भूल गए तुम,
क़ातिल का घर भूल गए तुम।

आस पास के कतरे पाकर,
रखा समुंदर भूल गए तुम।

गमले वाले फूल याद हैं,
फैंके पत्थर भूल गए तुम।

देख रहे बस घर की छत को,
सारा अम्बर भूल गए तुम।

चलते चलते मंजिल पाकर,
खाई ठोकर भूल गए तुम।

देख रहे दुनिया की हथेली,
अपनी किस्मत भूल गए तुम।।

मजदूर.....

अब्दुल सलाम, हिंदी प्राध्यापक

मेरी राहों में
कुछ रोड़े हैं!
जो सुखद दिनों में
अपनी आजीविका की ख़ातिर
हमनें ही छोड़े हैं!
थोड़े-थोड़े कर कड़े पत्थर
उम्मीदों की छेनीं से
मजबूत इरादों से तोड़े हैं!

ऊंची-ऊंची महलों में
अपने खून-पसीने तर कर
एक-एक ईंट जोड़े हैं!
नदियों के तेज प्रवाह को भी
सुख-चैन खेती को त्याग
पूंजी-पतियों की तरफ मोड़े हैं!

अमीरों के सुख-चैन-वैभव में
फ़ल दूध पराठे शाही-थाली में
अपने खून पसीने को ही निचोड़े हैं!
देश की मजबूत अर्थ-व्यस्था में

छोटे अबोध नादान बच्चों ने
गुल्लक के पैसे जोड़े हैं!
हक़ अन्याय गरीबी के ख़ातिर
ज़ुल्मों-सितम सह कुचल कर
खाए कितने ही कोड़े हैं!
विधाता अपनी लेखनी से
भूल कल्याण या प्रतिशोध वश
भाग्य हमारे फोड़े हैं!

पर सुख से रहे धरा और जन
रूखी सूखी उपवास काट कर भी
अपनें दुःख तो थोड़े हैं!
नौकरी-चाकरी सुख-चैन गए
बस एक रोजगार ही दिख रहा
तलना अब तो पकौड़े हैं!

घर द्वार गरीबी सब अर्पण कर
नेता जी कुर्सी पर बैठें
अपने हिस्से तो वक़्त के थपेड़े हैं!!

ख़ुशियों का बाजार.....

अभिमन्यु कुमार वर्मा,
एम.टी.एस

एक बार हो आएं हम भी
सज-संवर कर ठाट-बाट से
जीवन के हर पायदान पर
सजती जहां मनों-भावों की
मिलती जहां थोक-भावों सी
कुछ फुटकर भी छोटी-छोटी थी!
मोल- भाव जहां पर होती थी !!
कुछ पैसे ही बहुत काफी थे
चूरन कलम दवात टॉफी थे
खेल-कूद उछल-कूद फिर
अपने पास समय बाकी थे
बिंदास बोल अधिक भाव थे
सैर-सपाटे में बीज बोती थी!
ख़ुशियां उनमें भी होती थी !!
मन के साथ शरीर सयाना
मन-चंचल दिन व्यस्त बिताना
दिन-रात का यूं ही आना-जाना
बुनना स्वप्नों का ताना-बाना
रुझान सफलता नौकरी पाना
पास में पैसे अधिक होती थी !
पर ख़ुशियां अब बहुत छोटी थी !!

अचानक एक दिन सुध आयी
कहीं बचपन में हमनें बोई थी
एक बीज ख़ुशी से ख़ुशियों की
पर देखा तो बीज नदारत था
उसकी जगह विशाल हरे-भरे से
धन-समृद्धि-यश लिये ढ़ोती थी !
ख़ुशियों में विविधता होती थी !!
हंसी-बनावटी कुछ फूल थे
कुछ सम कुछ तल स्थूल थे
बचपन में साफ-चिकने होते
लंबे अंतराल से कण-धूल थे
प्रयास बहुत फिर भी खोती थी !
फल-फूल विशाल पर थोपी थी !!
उन सजी-धजी हर दुकान पर
खरीद सकें हम किसी दाम पर
मोल-भाव ऊंच-नींच को त्याग
बचपन के निर्मल भावों में
बढ़े थे निशान लगा कर जहां से
जहां ख़ुशियों में ख़ुशियां खोई थी !
बचपन में खुशियां जो बोई थी !!

मणिपुर- भारत में खेलों का पावरहाउस

संजेनबामनिंथौजाउ,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मणिपुर भारत में महान और प्रसिद्ध खिलाड़ी पैदा करने के लिए काफी प्रसिद्ध , भले ही जनसंख्या और क्षेत्र भारत के अन्य राज्यों की तुलना में बहुत कम है।राज्य को लोकप्रिय रूप से "भारत में खेलों का पावर हाउस"के रूप में जाना जाता है।

मणिपुर ने विभिन्न विषयों में कई महान और प्रसिद्ध खिलाड़ी पैदा किए हैं जिन्होंने देश का नाम रौशन किया है, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाए हैं।यह वह जगह है जहां छह बार की विश्व महिला मुक्केबाजी चैंपियन मैरीकॉम रहती हैं। भारत के खेल मैदान में मणिपुर का योगदान बहुत बड़ा है। मैं कुछ प्रसिद्ध खिलाड़ियों का नाम देना चाहूंगा जिन्हें मणिपुर ने बनाया है जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों चरणों में ख्याति अर्जित की है:

हॉकी: पंगंबम नीलकमल, खेत्रीमयुम थोइबा, टिंगोंगलेमा चानू,सुशीला चानू पुखरंबमआदि।बॉक्सिंग: मैरीकॉम, नगंगोम डिंग्को, लैशराम देवेंद्रो, लैशराम सरिता।भारोत्तोलन: नामिरकपम कुंजारानी, सैखोम मीराबाई चानू।तीरंदाजी: लैशराम बोम्बायला।बैडमिंटन: मीराबालुवांग।

फुटबॉल के क्षेत्र में मणिपुर ने लुकराम गुनाबीर, रेनेडी सिंह, बिजेन सिंह, वांगखेराकपम तोम्बा, लुकराम जेम्स, गौरामंगी मोइरंगथेम, उदंत कुमम, अमरजीत कियाम, सुरेश वांगजाम आदि जैसे कई प्रतिभा शाली खिलाड़ी पैदा किए हैं। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है सकिमि. गुनाबीर और बिजेन वर्तमान में एजी कार्यालय, मणिपुर में कार्यरत हैं। 2020-21 सीज़न के लिए भारत के शीर्ष डिवीजन इंडियन सुपर लीग में मणिपुर के 43 खिलाड़ी थे।मणिपुर वास्तव में भारत की "फुटबॉलरफैक्ट्री" के रूप में उभरा है।

वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीय टीम में मणिपुर के छह युवा फुटबॉल खिलाड़ी हैं। वहीं महिला फुटबॉल टीम में मणिपुर की 10 खिलाड़ी हैं। भारतीय महिला राष्ट्रीय टीम फॉरवर्ड, नगंगोम बालादेवी को अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) की महिला फुटबॉलर ऑफ द ईयर 2020-21 के रूप में नामित किया गया है। बाला फिलहाल स्कॉटलैंड में रेंजर्स में डब्लूएफसी के लिए खेलती हैं। वह यूरोप में एक विदेशी क्लब के साथ एक पेशेवर अनुबंध पर हस्ताक्षर करने वाली पहली भारतीय महिला फुटबॉलर हैं।

हाल ही में संपन्न टोक्यो ओलंपिक यह भी आश्वासन देता है कि मणिपुर भारत में खेलों का पावर हाउस है। ओलंपिक में भाग लेना हर एथलीट का सपना होता है और मणिपुर ने उल्लेखनीय संख्या में एथलीट तैयार किए हैं जिन्होंने ओलंपिक खेलों जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन में भाग लिया है।हॉकी खिलाड़ी पंगंबमनीलकमल वर्ष 1984 में ओलंपिक में भाग लेने वाले पहले मणिपुरी हैं।उन्होंने भारतीय पुरुष हॉकी टीम में गोलकीपर के रूप में खेला।तब से, मणिपुरी खिलाड़ियों/एथलीटों, विशेषकरहॉकी, मुक्केबाजी, भारोत्तोलन, जूडो और तीरंदाजी के क्षेत्र में ओलंपिक के बाद के संस्करण में लगातार भागीदारी होती रही है।इस साल भी, 5 मणिपुरी खिलाड़ियों/एथलीटों ने टोक्यो 2020 में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।अब तक मणिपुर ने 19 ओलंपियन तैयार किए हैं। मैरीकॉम ने 2012 में लंदन ओलंपिक में कांस्य पदक जीता और ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली मणिपुरी बनने का रिकॉर्ड बनाया।

टोक्यो ओलंपिक 2020 में मणिपुर का प्रदर्शन। मीराबाई चानू ने टोक्यो 2020 ओलंपिक में पहले दिन महिलाओंकी 49 कीलोग्राम भारोत्तोलन प्रतियोगिता में भारत की पदक तालिका की शुरुआत करने के लिए रजत पदक जीता।मणिपुर के एथलीट ने पदक जीतने के लिए कुल 202 किलोग्राम वजन उठाया ।

नीलकांत शर्मा ने हॉकी में कांस्य पदक भी जीता क्योंकि भारतीय हॉकी पुरुष टीम ने 41 साल बाद हॉकी में पदक के सूखे को समाप्त किया। मणिपुर के अन्य तीन ओलंपियनों ने भी अच्छाप्र दर्शन किया है, हालांकि वे इसे पदक में नहीं बदल सके।

मणिपुर के लिए भारत में सिर्फ खेलों का पावरहाउस होना ही काफी नहीं है।हमें बहुत मेहनत करनी है, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करना है ताकि हम भारत का प्रतिनिधित्व कर सकेंऔर हर विषय में चीन, संयुक्तराज्यअमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया आदि देशों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें।हमें जमीनी स्तर से काम करना होगा।हाल ही में संपन्न टोक्यो ओलंपिक में भव्य स्वागत, नकद पुरस्कार, मीडियाकवरेज, उपहार, उच्च सरकारी पदों पर नियुक्ति आदि जैसे ओलंपियनों को दिया गया प्रोत्साहन निश्चित रूप से अगली पीढ़ियों को खेलों और खेलों में अपने कैरियर का चयन करने के लिए प्रोत्साहित करेगा ।एकबार, मणिपुर में राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय का निर्माण पूरा हो जाता है और यह पूरे जोरों पर काम करना शुरू कर देता है, मुझे लगता है कि मणिपुर से और खिलाड़ी सामने आएंगे।हम निकटऔर दूर के भविष्य में और अधिक पदक और ट्राफियां की उम्मीद कर सकते हैं।खेलों और खेलों में मणिपुर का भविष्य उज्ज्वल दिख रहा है।

योगेश कुमार, डी.ई.ओ

अफगानिस्तान - भौगोलिक स्थिति के कारण एक युद्धभूमि

अफगानिस्तान की किस्मत कहें या भौगोलिक–विभिन्न कबीलों में बंटी सामाजिक स्थिति, यह पिछली सदी के साथ ही से कई युद्धों और गृह युद्धों का भुक्तभोगी रहा है। कभी ब्रिटेन और रूस ने अफगानिस्तान में रह कर लम्बी अप्रत्यक्ष लड़ाई लड़ी। फिर 1979 में सोवियत सेनाओं ने काबुल में प्रवेश कर अमेरिका से लड़ाई लड़ी। अफगानिस्तान बेवजह अपनी सुविधाजनक भौगोलिक स्थिति की वजह से उस समय की दो महाशक्तियों के बीच के संघर्ष का लगातार शिकार बना। अमेरिका की जीत हुई सोवियत संघ की बुरी हार, मगर अफगानिस्तान बेवजह युद्धभूमि बन कर रह गया।

फिर शुरु हुआ गृहयुद्धों का अनवरत सिलसिला। फिर मुजाहिदीनों का कब्जा, फिर तालेबानों की खौफ से लबरेज हुकूमत। नार्दन एलायंस और तालेबानों की गैरजरूरी जंग तो चलती ही रही है। पिछले दो दशकों में 20 लाख लोग इन युद्धों का शिकार हुए। और अफगानिस्तान विकास की धारा से अलग–थलग पड़ा, ध्वस्त, उजाड़ किसी पुरानी सभ्यता का अवशेष नज़र आने लगा है। धार्मिक उन्मादियों के उन्माद की प्रयोगशाला बने इस देश में अब नष्ट करने को कुछ शेष नहीं रहा। कभी यह देश रविन्द्रनाथ टेगौर के हँसमुख नायक काबुलीवाला का अपना वतन हुआ करता था। यहाँ की स्त्रियाँ आज की अपेक्षाकृत कहीं आज़ाद थीं।

उन्हें आज़ादी थी पढ़ने की, अपना व्यवसाय चुनने की, हिन्दी फिल्में देखने की। अब ये शिक्षा ही नहीं, सहज चिकित्सा सेवाओं से भी वंचित कर दी गई हैं, महिला चिकित्सक को प्रैक्टिस करने की इजाज़त नहीं और बीमार होने पर अफगानी महिलाओं को मर्द चिकित्सक के पास जाने का हक ही नहीं। कभी शादी ब्याह अफगानिस्तान में खुशियों के मंजर लाया करते थे, जब कई दिन तक नृत्यसंगीत चलता था। अब हालात यह हैं कि एक विवाह में बुरके में से दुल्हन की मेंहदी लगी हथेलियाँ दिख गईं तो उसके हाथ ही काट डाले गये, तालेबानों के हुक्म से। अब यहाँ ज्यादातर लोग या तो युद्धों में मारे गए हैं या, आस–पास के देशों में जाकर शरणार्थियों का सा जीवन व्यतीत करने को विवश हैं। जो यहाँ हैं वे अब भी भुखमरी, तालेबानी पाबंदियाँ और युद्ध झेल रहे हैं। अब यहाँ खण्डहरों और युद्ध या संघर्ष में इस्तेमाल होते पुरुषों, बुरका पहने स्त्रियों और भूख से बिलबिलाते बच्चों के सिवा कुछ नहीं दिखाई देता। हथियारों के ढेर में तब्दील इस समाज का यह हश्र बहुत दु:खदायी है। अफगानिस्तान की एक चौथाई आबादी करीब 40 लाख नागरिक युद्ध की दो तरफा मारों से बचने के लिये पड़ोसी देशों खासतौर पर पाकिस्तान पलायन कर गए हैं। अफगानिस्तान सऊदी ओसमा बिन लादेन के मजहबी जेहाद की आधारभूमि बन कर रह गया है। तालेबानी फौज में पाकिस्तानी मदरसों से निकले मासूम किशोरों से अटी पड़ी है। 1998 में मजारशरीफ में 1500 युवक तालेबानी लड़ाई में मारे गए। तालेबान की शुरुआत 1994 में पख्तून में हुई थी, इसके नेता थे मोहम्मद उमर। मजहबी आस्था और पाकिस्तान की फौज की मदद से तथा सऊदी अरब की आर्थिक मदद से इस सामंतवादी व्यवस्था ने अफगानिस्तान में अपनी जड़ें फैलाना शुरु की थीं। तालेबान का साथ देने वाले लोग कट्टरता की अंतिम सीमा तक जाकर आस्था रखने का दावा करते थे और वे मानते थे कि अफगानिस्तान के जबरन शुद्धीकरण से ही खुशहाली आएगी। तब ओसमा बिन लादेन बस एक असंतुष्ट सऊदी था और तालेबान की आर्थिक मदद किया करता था। इसी धन के लालच और धर्मान्धता के चलते तालेबान की फौज पाकिस्तानी मदरसों से धर्मान्धता का पाठ पढ़ कर निकले नौजवानों, किशोरों, अरब वॉलेन्टियर्स का मिश्रण बन गई। और शुरु हुआ आतंक का नया दौर जो अब विश्वभर में अपनी जहरीली जड़ें फैला रहा है।

रामचरितमानस की प्रासंगिकता

अभिनव चंद्रा, डी.ई.ओ

आज के मानव समाज जिन विसगतियाँ और विडंबनाओं का सामना कर रहा है उन से निजात पाने के लिए तुलसी का काव्य रामचरित मानस विशेष रुप से प्रासंगिक है। समाज अनेक वर्गो और वर्णो में विभाजित हो चुका है। मानव-मानव के बीच विषमता शिखर पर पहुच गयी है। एक मनुष्य दूसरों के प्रति घृणा से परिचालित हो रहा है। समूचे भारत वर्ष मेंइन दिनों भावनात्मक एकता की कमी महसूस की रही है जिसके कारण मानस की प्रासंगिता और बढ़ गयी है। इस महान कवि ने राम राज की कल्पना दवारा 'ना ही दरिद्र कोई दुखी ना दीना' (उत्तरकाण्ड) का आदर्श प्रस्तुत किया गया। सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति का तुलसी के रामराज्य में गंभीर रचनात्मक आश्वासन है। आज समूचे विश्व में इस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानव संघर्ष तीव्र से तीव्रतर हो चला है।

तुलसी ने लिखा है- 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सोई नृप अवसि नरक अधिकारी।'। (अयोध्याकांड) अर्थात जिस राजा के राज्य में प्रजा दुखी है, अभावग्रस्त जीवन व्यतीत कररही है, वह राजा निश्चय ही नरक का अधिकारी है। तुलसी की यह पंक्तियाँ आज के शासक वर्ग को पूरे मनोयोग से पढ़ने और समझने की आवश्यकता है। यह सही है कि तुलसी दास ने जिस समय रामचरित मानस की रचना की उस समय भारत की दशा अत्यंत दयनीय थी, विदेशी शासकों दवारा निर्दोष जनता पर अत्याचार किये जा रहे थे और भारत की भूमिआक्रमणकारियों के दमन से त्रस्त थी। तुलसी ने इस विषम परिस्थिति में रामचरित मानस लिखकर इस प्रकार ज्योति फैलाई कि न केवल अपने समय में वह भारतीय संस्कृति की संरक्षक बनी बल्कि बाद के सालों में भी वह उहमारी संस्कृति की विजयपताका बनकर देश विदेश में फैली। साहित्य को राजनीति के आगे जलनेवाली मशालकहा गया है। तुलसी की रामकथा ने इसे सच्चाई के रुप में चरितार्थ किया। आज का भारत वर्ष यदयपि सांस्कृतिक दृष्टि से अपना प्राचीन गौरव गवाँ चुका है। तथापि जिन अंशों में यह आज भी अपनी जातीय तेज के साथ अग्रसर और सक्रिय है उनका सबसे बड़ा श्रेय तुलसी के काव्य को ही देना चाहिए।

जो लोग तुलसी को शूद्रों और स्त्रियों के प्रति निष्ठुर और संवेदनशील मानते है, वे वस्तुतः एक बडे भारी विभ्रम के शिकार हैं। तुलसीदास जी ने भारतीय नारी को उसकी समूची गरिमा और एश्र्वय के साथ सीता अनुसूइया जैसी नारियों में प्रतिष्ठित किया है। वे लिखतेहैं-

'कत विधि सृजि नारी जग माही। पराधीन सपनेहुँ सुख नाही ' ।।

अर्थात ना जाने किस विघाता ने नारी का सृजन किया है जो पराधीन है और पराधीन होने के कारण सपने में भी सुख नहीं मिलता। नारी के प्रति तुलसी की इस चिन्ता से ये समझने में किसी प्रकार का विलम्ब नहीं होना चाहिए कि यह कवि नारियों के प्रति कितना संवेदनशील रहा है। यह अकारण नहीं है कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोस्वामी तुलसीदास को गौतम बुद्ध के बाद भारत का सबसे बड़ा लोकनायक कहा था। लोकनायक वह होता है जो समन्वय कर सके। हमारा समाज अनेक वर्णो और वर्गो में बटा हुआ एक विखंडित समाज बन गया है। इसमे ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, शासक-शासित का भेद बढ़ता ही जा रहा है। अनेकता की प्रवृतियाँ स्वाभाविक हैं। किन्तु अनेकता में एकता ही किसी सबल और सक्रिय जाति और देश की पहचान होती है। आज के विषम परिवेश में तुलसी कृत रामचरित मानस के अनुशीलन से अनेकता में एकता के तत्वों को पहचाना जा सकता है। और विखंडित समाज को अखंड भारत के आदर्श से जोड़ा जा सकता है।

तुलसी के राम एक ऐसे राजा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं जो परम उदार हैं,परदुःखकातर हैं। प्रजा वत्सल हैं, बिनाकुछ लिए ही दीनों के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं,उनका उद्धार करते है। शासक के रुप में ऐसे राजा राम की अनिवार्यता हर युग को रहेगी।सनातन काल तक मानव समाज राम जैसे शासक की प्रतीक्षा करता रहेगा। तुलसी काव्य कीप्रासंगिकता आज के मानव समाज में इस दृष्टि से भी है कि वह धार्मिकता के सच्चे स्वरुप को उजागर करता है, विशेषतः हिन्दू समाज जो अनेक कुरीतियों को आश्रय दे रहा है। अति संक्षेप में हम कह सकते हैं कि आज के मानव समाज में तुलसी का काव्य अधिकांश रुप में प्रासंगिक है। सामाजिक न्याय, नारी की प्रतिष्ठा, समाज को मुख्यधारा में लाने का प्रयत्न अधिक से अधिक रचनात्मक हो सके एवं शान्ति व स्नेह के साथ हमारा समाज प्रगति के पथ पर निर्भय हो कर आगे बढ़े इसके लिए तुलसी कृत रामचरित मानस का अध्ययन अनिवार्य ही नहीं अपरिहार्य है।

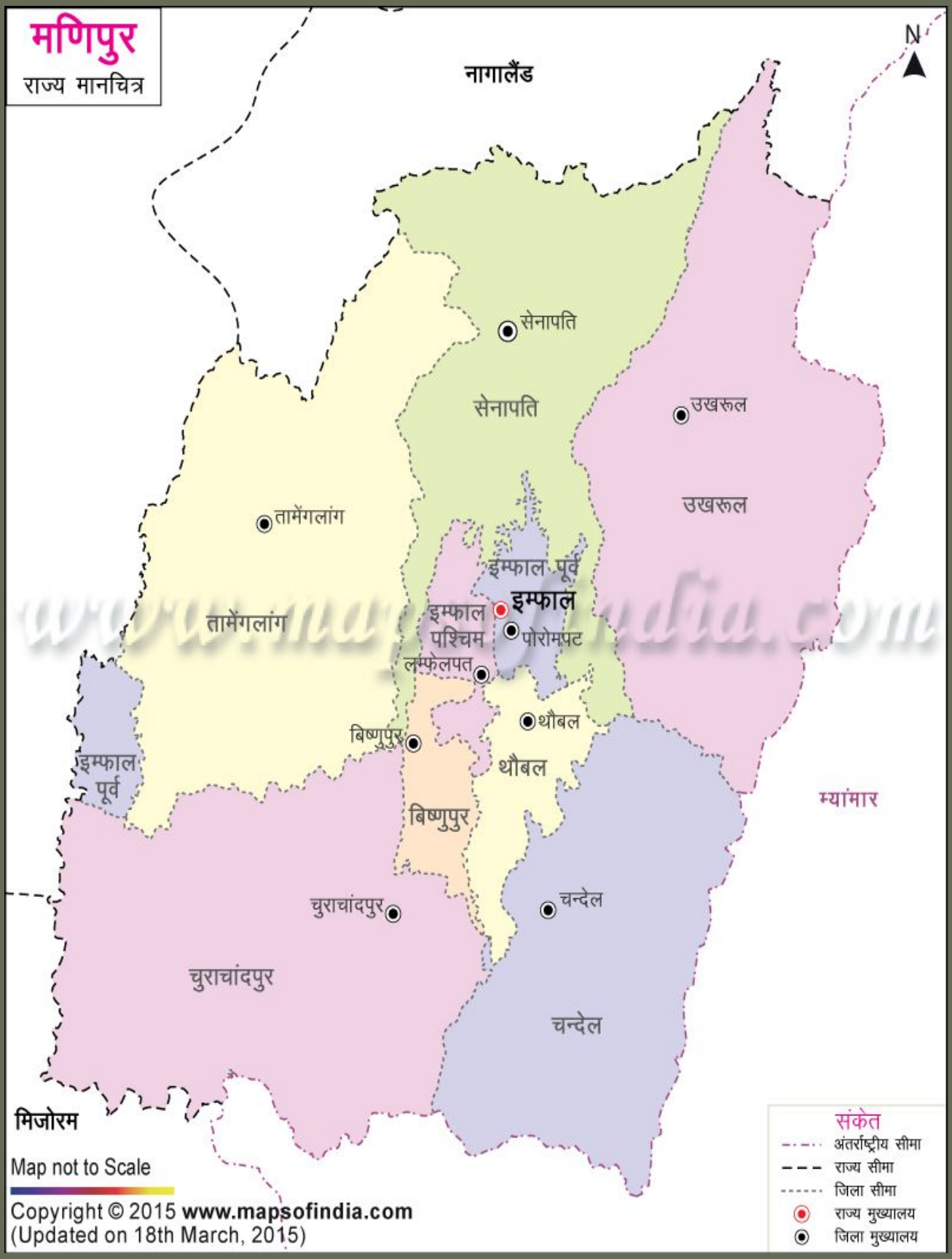
मणिपुर
राज्य मानचित्र
N
नागालैंड
सेनापति
सेनापति
उखरूल
उखरूल
तामेंगलांग
तामेंगलांग
इम्फाल पूर्व
इम्फाल
इम्फाल पश्चिम
पोरोमपट
लम्फेलपत
थौबल
थौबल
बिष्णुपुर
बिष्णुपुर
इम्फाल पूर्व
म्यांमार
चुराचांदपुर
चुराचांदपुर
चन्देल
चन्देल
मिजोरम
Map not to Scale
Copyright © 2015 www.mapsofindia.com
(Updated on 18th March, 2015)
संकेत
अंतर्राष्ट्रीय सीमा
राज्य सीमा
जिला सीमा
राज्य मुख्यालय
जिला मुख्यालय

कंगला किला

लोकटक झील